WITWAVES
JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
Vol-1 Issue-2
(International Peer-Reviewed E-Journal)
(November 2024)

समृद्ध भारत के लिए पर्यावरण संरक्षण एवं प्रबंधन

राजकुमार चौरसिया
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर म.प्र.

सार संक्षेप

प्रस्तुत शोध आलेख में शिक्षित, स्वस्थ्य एवं समृद्ध पर्यावरण संरक्षण एवं प्रबंधन का अध्ययन किया गया है। जिसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के संसाधनों एवं उनके प्रबंधन की अधिक आवश्यकता होती है।[1] जिनमें वन संरक्षण, ऊर्जा संरक्षण, खनिज संरक्षण, मृदा संरक्षण, जल संरक्षण, चारागाह संरक्षण एवं वन्य जीव संरक्षण की विशेषता महत्वपूर्ण है। इन संसाधनों के अभाव में भारत कभी भी सुरक्षित एवं समृद्ध नही हो सकता है। भारत को सुरक्षित एवं समृद्ध बनाने के लिए पर्यावरण का संरक्षण एवं प्रबंधन करना होगा।

कुँजीभूत शब्द

पर्यावरण, संरक्षण, प्रबंधन, समृद्ध भारत

प्राक्कथन

सुरक्षित एवं समृद्ध भारत के लिए पर्यावरण संरक्षण एवं उसका प्रबंधन अति आवश्यक है। संरक्षण का तात्पर्य है कि वातावरण के घटकों को सुरक्षा प्रदान करना। ताकि मानवीय कार्यों पर न्यूनतम प्रभाव पड़ सके और वह तत्व या संसाधन लम्बी अवधि तक मानवीय कार्यों हेतु उपलब्ध हो सके।[2] स्पष्ट है कि संरक्षण प्रदान करने के लिए संसाधनों की गुणवत्ता और स्वभाव का ख्याल रखना पड़ता है। संवर्धनीय संसाधनों की तुलना में असंवर्धनीय संसाधनों को संरक्षण की अधिक आवश्यकता होती है। उदाहरणार्थ जल विद्युत और कोयला में से कोयला को संरक्षण देना आवश्यक है। क्योंकि इसका भण्डारण निश्चित है। इसे बढ़ाया नही जा सकता है। जबकि जल, विद्युत शाश्वत् है। दुर्लभ संसाधनों का संरक्षण भी आवश्यक है। प्रबंधकीय दृष्टिकोण से निम्नलिखित संसाधनों का संरक्षण अधिक महत्वपूर्ण है।

वन संरक्षण

भारत को समृद्ध एवं सुरक्षित बनाने के लिए वनों का संरक्षण बहुत आवश्यक है। इसके अभाव में भारत का विकास नही हो सकता है। क्योंकि वन हमें विभिन्न प्रकार के वनोत्पाद, तापमान नियंत्रण, वर्षा कराने में सहायक होते हैं। जो किसी भी देश को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह् करते हैं।[3]

अत: इनकी रक्षा के लिए अनेक उपाय हैं। जैसे वृक्षारोपण, चयनात्मंक कटाई, संयुक्तं उत्पायदन, अग्नि रक्षा पथ आदि का निर्माण सामाजिक वानिकी अभियान, वन शोध एवं प्रबंध संस्था की स्थाािपना वन संरक्षण को गति प्रदान होगी।

ऊर्जा संरक्षण

ऊर्जा के अभाव में किसी भी देश के विकास की कल्पना नही की जा सकती है। वर्तमान में जिस देश के पास जितनी अधिक ऊर्जा है। वह देश आज के समय में उन्नत, समृद्ध, सुरक्षित एवं शक्तिशाली है।

अत: ऊर्जा संकट से निपटने के लिए उपाय किए जा रहे हैं। जैसे तकनीकि सुधार, वैकल्पिक ऊर्जा का विकास, सौर ऊर्जा, वायु ऊर्जा, बायोगैस आदि।

खनिज संरक्षण

खनिजों के अंधाधुंध उपयोग से उसका भण्डार घट रहा है। भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर इनका संरक्षण भी आवश्यक है। खनिज संरक्षण हेतु खुदाई की विकसित तकनीकि परिवहन में नुकसान पर रोक, उन्नत तकनीकों से उनका उपयोग और निर्यात पर नियंत्रण खनिज संरक्षण के महत्वपूर्ण पक्ष हैं। अत: भारत को समृद्ध बनाने के लिए खनिज संरक्षण बहुत जरूरी है। खनिजों के अभाव में देश का विकास सम्भाव नही है।

मृदा संरक्षण

मृदा संरक्षण किसी भी देश को समृद्ध एवं आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। अच्छी एवं उपजाऊ मृदा अच्छा उत्पादन प्रदान करती है। जो किसी भी देश की अर्थ की

व्यवस्था को सुदृढ़ बनाती है। इसके संरक्षण के मृदा प्रदूषण की रोकथाम हेत कीटनाशकों तथा रासायनिक उर्वरकों का संतुलित प्रयोग भी महत्वपूर्ण पक्ष है।[4]

जल संरक्षण

जल जीवन का आधार है। बिना जल के किसी भी देश की आर्थिक विकास की कल्पना नही की जा सकती है। अत: जल संरक्षण के लिए तट बाँध बना कर नदी जल को रोकना, तालाबों, कुँओं, बाँधों का निर्माण, वनस्प ति आवरण का विकास आदि महत्व पूर्ण कार्य है।

चारागाह संरक्षण

भारत को समृद्ध बनाने में चारागाह संरक्षण एक महत्वपूर्ण कार्य है। अत्यअधिक पशुचारण भूमि चारागाह रेगिस्तान में तथा जंगल झाड़ी में बदलते जा रहे हैं। राजस्थान में अनियंत्रित पशुचारण अनेक प्रकार की समस्याओं को जन्म दे रही है। इस संकट से पार पाने के लिए यह आवश्यक है कि चराई को नियंत्रित किया जाए।

वन्य पशु संरक्षण

पशु पर्यावरण के कारक हैं। इनकी अनुपस्थिति से एक घटक के कमजोर होने की सम्भावना बढ़ जाती है। जिससे पर्यावरण असंतुलित हो जाता है। जिससे अनेक पर्यावरणीय समस्याऐं किसी भी देश की समृद्धि में बाधक बन सकती है। अत: इनका संरक्षण एवं संवर्धन एक महत्वंपूर्ण पक्ष है।[5]

निष्कर्ष

किसी भी देश के विकास में पर्यावरण का संरक्षण एवं उसका प्रबंधन बहुत आवश्यक है। पर्यावरण संरक्षण के लिए भारत में जिन संसाधनों का संरक्षण जो भारत को समृद्ध बनाते हैं। वे वन, ऊर्जा, खनिज, मृदा, जल, चारागाह, वन्यजीव संसाधन हैं। इनके अभाव में भारत समृद्ध एवं सुरक्षित नही बन सकता है। अत: भारत को समृद्ध, सुरक्षित बनाने के लिए इन संसाधनों का संरक्षण एवं प्रबंधन करना अतिआवश्यीक है।

संदर्भ

1. पाण्डे औंकार नाथ (2004) भूगोल मैनुअल जुपीटर सीरीज एच.जी. पब्लिकेशन नई दिल्लील। पृष्ठे क्र. 178
2. मामोरिया चतुर्भुज (2000) भारत का भूगोल भूचालपुरा उदयपुर (राजस्थारन) पब्लिकेशन उदयपुर पृष्ठ क्र. 168-198
3. अवस्थी् एन.एम. (1995) पर्यावरण भूगोल म.प्र. हिन्दीन ग्रन्थब अकादमी भोपाल पृष्ठ क्र. 262-280
4. सिंह सविन्द्री (1994) पर्यावरण भूगोल प्रयाग पुस्तदक भवन इलाहाबाद उ.प्र. पृष्ठ क्र. 111-141
5. गौतम अलका (1997-1998) भारत का भूगोल रस्तोगी पब्लिकेशन मेरठ उ.प्र. पृष्ठ क्र. 99-119